# व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति का प्रभाव

व्यक्तित्व को प्रभावित करने में जैविकीय कारकों एवं सामाजिक कारकों के साथ साथ सांस्कृतिक कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संस्कृति चाहे विकसित हो अथवा अविकसित, सरल हो या जटिल, आदिम हो अथवा आधुनिक इसका प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर अवश्य रूप से पड़ता है। Linton के शब्दों में " संस्कृति सम्पूर्ण रूप में किसी भी समाज के सदस्यों को जीवन के समस्त मामलों में अनिवार्य पथ प्रदर्शक प्रस्तुत करती है"

व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करने में कुछ महत्वपूर्ण तत्वों की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है।

(1) Traditions परम्पराएँ: परम्परा मानव समाज की एक अति महत्वपूर्ण शक्ति है। मानव व्यवहार एवं आचरण के निर्धारण में सीखने की प्रक्रिया में तथा व्यक्तित्व के विकास में परम्पराओं का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परम्पराएँ सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यवहारों के निश्चित प्रतिमान प्रस्तुत करती हैं और सदस्यों को उनके अनुसार व्यवहार करने को प्रेरित करती है। परम्पराएँ विभिन्न प्रकारों से मानव व्यवहारों को निश्चित कर के सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाकर और सुरक्षा की भावना पैदा कर के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती हैं।

(2) प्रथाएँ Customs: प्रथाएँ पूर्वजों को दीर्घकालीन अनुभवों की परिणाम होती हैं। तथा दूसरे समाज द्वारा स्वीकृत होती हैं। व्यक्ति उन्हें समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा ग्रहण करता है। अतः यह

व्यक्ति के व्यक्तित्व का अंग बन जाती हैं। प्रथायें व्यक्ति के जीवन के किसी विशेष पक्ष को ही प्रभावित नहीं करतीं बल्कि सभी पक्षों पर इसका नियन्त्रण होता है।

(3) रूढ़ियाँ Mores: रूढ़ियाँ सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार की हो सकती हैं। सकारात्मक रूढ़ियाँ कुछ व्यवहारों को करने की आज्ञा देती हैं जैसे सचबोलना, ईमानदारी इत्यादि। नकारात्मक रूढ़ियाँ कुछ व्यवहारों को ना करने की प्रेरणा देती हैं। जैसे झूठ नबोलना, चोरी न करना इत्यादि। इन दोनों प्रकार की रूढ़ियों से व्यक्ति को सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास करने में सहायता मिलती है।

(4) Religion धर्म! व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास एवं समाजीकरण में धर्म की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक किन किन संस्कारों को अपनाना है तथा समाज में उसकी स्थिति एवं भूमिका का निर्धारण, उत्तरदायित्वों की व्यवस्था, उचित अनुचित आदि का निर्धारण धर्म के द्वारा ही होता है। धर्म मनुष्य में सदाचार, परोपकार, सेवाभाव, सहिष्णुता, समाज कल्याण आदि का विकास करता है। धर्म मानव जीवन के उद्देश्यों को निश्चित, उन्हें प्राप्त करने के साधन निश्चित करने तथा जीवन की मान्यताओं को निर्धारित करने के लिए सामाजिक मूल्यों का निर्माण करता है। यह मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के अंग बन जाते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि धर्म व्यक्तित्व के संगठन एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

(5) भाषा (Language) भाषा के आधार पर ही अपने विचारों, भावनाओं आदि को अभिव्यक्त करते हुए व्यक्ति सामाजिक अन्तःक्रियाओं में भाग लेता है।

भाग लेता है। यह समाजिक अन्त: क्रियायें व्यक्तित्व के निर्धारण में बड़ी महत्वपूर्ण है।

(3) संस्थाएँ Institutions: समाज में मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये, समाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक संस्थाएँ पाई जाती हैं। यह संस्थाएँ व्यक्ति के व्यवहारों का निर्धारण एवं नियमन करते तथा उसे विभिन्न स्थितियाँ एवं भूमिकाएँ प्रदान करके उसके व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता करती हैं।

(4) बच्चों का लालन पालन Upbringing of Children: बच्चों के पालन पोषण के व्यवस्था भी संस्कृति द्वारा निश्चित होते हैं जिनका व्यक्तित्व के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान है। Mead ने पालनपोषण का व्यक्तित्व पर प्रभाव जानने के लिये मुण्डगुमर जनजातियों का अध्ययन किया है। उनके अनुसार अरापेश जनजातियों में बच्चों का पालन पोषण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए बड़े स्नेह से किया जाता है। इसलिये इन लोगों के व्यक्तित्व में प्रेम, सेवा, सहानुभूति, सहयोग, नम्रता आदि गुण पाये जाते हैं। इसके विपरित मुण्डगुमर जनजाति में लापरवाही से पालन पोषण के कारण उनके बच्चों में ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, घृणा, प्रतिकार आदि विशेषताएँ पाई जाती हैं।

(8) विज्ञान Science: विज्ञान ने वर्तमान समाज को नवीन मान्यताएँ, नये विश्वास, नवीन दृष्टिकोण तथा ज्ञान तथा नये नये आविष्कार प्रदान किये हैं। जिनका व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मानव व्यक्तित्व के विकास पर में जैविकीय, समाजिक तथा सांस्कृतिक तीनों कारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

—x—

Scanned with CamScanner